45 महासती अञ्जना जिन प्रतिमा के अनादर का भयंकर फल

विद्याधर राजा महेन्द्र की पुत्री अंजना को एक दिन गेंद से खेलती देखकर उसके पिता को पुत्री विवाह योग्य उम्र की हुई जानकर चिंता होने लगी और उसके वर की शोध के लिये मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया। विचार करके राजा प्रहलाद के पुत्र पवनंजयकुमार के साथ विवाह करना निश्चित किया। पवनकुमार के पिता को सगाई का दस्तूर भेजा गया। राजा प्रहलाद ने भी उसे स्वीकार कर लिया और विवाह का दिन निश्चित कर लिया। पवन कुमार अंजना के रूप का वर्णन सुनकर उसे देखने के लिये अतिव्याकुल हो गया। अंजना के रूप को देखकर वह अति प्रसन्न हुआ।

उससमय उसकी सखी बसंतमाला पवनकुमार की प्रशंसा कर रही थी। तभी दूसरी सखी मिश्रकेशी मुंह बिगाड़कर बोली कि इसके बजाय विद्युतप्रभ के साथ अंजना का विवाह निश्चित होता तो अति उत्तम होता। इस प्रकार दोनों सखियां बोल रहीं थी पर अंजना शर्म वश मौन थी। यह देखकर पवनकुमार को गुस्सा आया और उन्होंने अंजना के साथ विवाह तो किया; परन्तु बाईस वर्षों तक उसके सामने देखा तक नहीं। इस कारण अंजना बहुत दुःखी रहती थी।

एक बार पवनकुमार को रावण की सहायता के लिये जाना पड़ा। उस समय अंजना पवनकुमार के दर्शन के लिये बाहर खड़ी रही; परन्तु पवनजी ने उसकी तरफ नजर पड़ते ही उसका तिरस्कार किया इससे अंजना अति दुःखी हुई।

पवनजी रावण की सहायता के लिये चले गये। चलते हुए उन्होंने रास्ते में मान सरोवर के पास पड़ाव डाला और वे वहाँ झरोखे में बैठे थे। उस समय एक चकवी चकवे के नहीं आने से इधर-उधर फिरती हुई व्याकुलित होती उन्होंने देखी तो पवनजी को अपनी प्रिया अंजना का विचार आया कि अरे ! यह चकवी, चकवे के लिये व्याकुल होकर तड़फती है तो अंजना की क्या दशा होती होगी ? अरे ! मैंने उसे बहुत दुःख दिया हैं। अंजना का तो कोई अपराध नहीं

था। उसकी सखी बोली थी और मैंने बिना विचारे अंजना का बाईस वर्षों तक त्याग कर दिया। अब उस सती से मिले बिना मुझको चैन नहीं मिलेगा. इसलिये उन्होंने अपने मित्र प्रहस्त से बात की और तुरन्त गुप्तरीति से विमान में बैठकर अंजना के महल में गये। अचानक पवनजी के आने से अंजना के हर्ष का पार नहीं रहा। पवनजी ने अपनी भूल के लिये क्षमायाचना की। अंजना शर्माते हुए कहती है कि हे नाथ ! आपका कोई दोष नहीं है, मेरे पूर्व कर्मोदय से ही ऐसा हुआ है। अब आपने कृपा की है इससे मैं धन्य हुई हूँ- इत्यादि प्रेम पूर्ण वार्तालाप करके पवनजी जिस गुप्त रीति से आये थे उसी गुप्त रीति से जाते हैं। अंजना कहती है कि हे नाथ! मेरा ऋतुकाल है, अतः यदि गर्भ रहेगा तो मेरी क्या दशा होगी? अतः आप माता-पिता से मिलकर जाओ। परन्तु पवनजी को माता-पिता को मुख दिखाने में शर्म आती होने से उन्होंने अपना कड़ा और अंगुठी माता-पिता को बताने को कहा।

इधर थोड़ा समय व्यतीत होने पर गर्भ प्रगट हुआ। इस कारण अंजना की सास केकुमति ने उसका बहुत तिरस्कार किया और अंगुठी बताने पर भी मान्य नहीं किया तथा क्रूर सामन्त को बुलाकर अंजना को महिन्द्रनगर भिजवा दिया। अंजना महिन्द्रनगर पहुंचकर पिता के घर जाती है। द्वारपाल ने अंजना के आने की सारी हकीकत राजा से कही जिसे सुनकर पिता महेन्द्र राजा ने कहा कि इसे कुल कलंकिनी होने से कोई भी मेरे राज्य में प्रवेश नहीं करने दे। इस प्रकार मात-पिता से भी तिरस्कार पाकर अंजना वन जंगल में जाती है। चलते-चलते एक गुफा आती है। वहाँ देखा तो मुनिराज ध्यान में बैठे थे। जब मुनिराज ने ध्यान पूर्ण किया तो अंजना पूछती है कि प्रभो ! मैंने कैसे पाप किये हैं कि जिससे पति और माता-पिता से मैं तिरस्कार को प्राप्त हुई हूँ और जंगल में भटक रही हूँ- इत्यादि अपनी दुःखभरी कहानी मुनिराज से कही।

अवधिज्ञानी मुनिराज कहते हैं कि पूर्व जन्म में तू अरुणपुर के राजा सुकंठ की कनकोदरी नाम की रानी थी। तूने पटरानी पद के अभिमान से अपनी सौत पर क्रोध करके जिनेन्द्र प्रतिमा को जिनमंदिर में से बाहर निकाली। उस समय संयमश्री नामक आर्यिका आहार के लिये आई; परन्तु उन्होंने जिन प्रतिमा के अनादर के कारण पारणा नहीं किया और जाते-जाते कनकोदरी को समझाते गई कि हे भोली ! तूने जिन प्रतिमा का अनादर करके महान पाप किया है। देव-शास्त्र-गुरु के अनादर का फल नरक में महान दुःख भोगना है। इत्यादि बहुत समझाने से रानी कनकोदरी ने नरक के दुःख से डरकर बहुत पश्चाताप किया।

जिनप्रतिमा को धूम-धाम से मंदिर में पधराकर जिनेन्द्र की पूजा भक्ति करके श्रावक के ग्रहण किये। यदि आर्यिकाजी ने नही समझाया होता तो तू अधोगति में जाती। जिनेन्द्र प्रति का अनादर देखकर यदि आर्यिकाजी तुझे सम्बोधन नहीं करे तो उनको भी प्रमाद का लगता। इस कारण उन्होने तुझे धर्म का उपदेश देकर पाप से वापस मोड़ा। तत्पश्चात् तू का विशेष आराधन करके समाधिमरण करके स्वर्ग में गई और वहाँ से आकर राजा महेन्द्र यहाँ जन्म लिया। जिनप्रतिमाजी के अनादर के फल में पति द्वारा तेरा तिरस्कार हुआ, कु द्वारा तेरा अनादर हुआ। अब तेरा पापकर्म टल गया है। अब पुण्य के योग से पति का मि होगा- इत्यादि पूर्व भव की बात मुनिराज ने उससे कही और फिर मुनिराज विहार क अन्यत्र चले गये।

तत्पश्चात् उसी गुफा में हनुमानजी का जन्म होता है और अंजना के मामा जंगल आ पहुंचते हैं व उसे अपने घर ले जाते हैं और पवनजी भी आकर मिलते हैं। (अंजना यह कथा पद्म पुराण में विस्तार से है, यहाँ तो मात्र उसका संक्षिप्त सार दिया गया है देव-शास्त्र-गुरु की विराधना-अनादर-तिरस्कार के भाव से कैसे-कैसे नरकादि दुःख भो पड़ते हैं। यह कथा बोध देती है कि देव-शास्त्र-गुरु की किसी भी प्रकार से मन-वचन-क से अथवा कृत कारित - अनुमोदन से की गई विराधना महान पाप का कारण है।)

-पद्मपुराण में

मृत्यु के समय जीवन के अभ्यास का जोड़ आता है। उस अवसर पर भेदज्ञानपूर्वक या उसकी भावनापूर्वक शांति से शरीर का त्याग करे उसकी चतुराई सच्ची है।

-पूज्य गुरुदेवश्री